IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

***डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार,** प्रोफेसर, वर्धमान कॉलेज, बिजनौर, उत्तर प्रदेश
****अंशिका,** शोधार्थिनी

सारांश

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं उसके विभिन्न आयामों अर्थात् व्यक्तिगत जागरुकता, पारस्परिक जागरुकता, व्यक्तिगत प्रबंधन तथा पारस्परिक प्रबंधन का तुलनात्मक अध्ययन करना है । इस अध्ययन में यह भी ज्ञात किया गया कि वर्ग (आरक्षित / अनारक्षित) एवं क्षेत्र (ग्रामीण / शहरी) का विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। शोध में विवरणात्मक शोध विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया। अध्ययन की जनसंख्या में बिजनौर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 11 एवं 12 के विद्यार्थी शामिल किये गये, जिनमें से 600 विद्यार्थियों (300 आरक्षित एवं 300 अनारक्षित) का चयन यादृच्छिक न्यादर्श प्रविधि द्वारा किया गया। संवेगात्मक बुद्धि के मापन हेतु डॉ0 एस0के0मंगल एवं श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित इमोशनल इंटेलिजेंस इन्वेंटरी का उपयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण हेतु द्विमार्गी प्रसरण विश्लेषण का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के बीच संवेगात्मक बुद्धि तथा उसके सभी आयामों में सांख्यिकीय रुप से सार्थक अंतर पाया गया, जिसमें अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। इसी प्रकार ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य भी महत्वपूर्ण अंतर पाया गया, जिसमें शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि अधिक विकसित पायी गयी। साथ ही वर्ग एवं क्षेत्र की अंतःक्रिया का प्रभाव भी सार्थक पाया गया।

मुख्य शब्द : संवेगात्मक बुद्धि, आरक्षित वर्ग, अनारक्षित वर्ग, ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी।

❖ प्रस्तावना

शिक्षा का वास्तविक अर्थ केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं है, वरन् यह मनुष्य के समग्र व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया है। **शर्मा (2019)** के अनुसार शिक्षा के बिना व्यक्ति का जीवन अधूरा माना जाता है, क्योंकि यह उसे अज्ञानता और अंधविश्वास से मुक्त कर जीवन को दिशा और उद्देश्य प्रदान करती है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में माध्यमिक शिक्षा एक महत्वपूर्ण चरण है, जहाँ विद्यार्थी अपने ज्ञान को गहराई से समझते हुए अपने भविष्य की दिशा निर्धारित करते हैं। इस स्तर पर अधिकांश विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं, जो मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक परिवर्तनों का संवेदनशील दौर होता है। **सक्सेना (2018)** के अनुसार इस आयु के विद्यार्थी आंतरिक द्वंद्व का अनुभव करते हैं, जहाँ वे स्वतंत्रता और मार्गदर्शन की आवश्यकता के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करते हैं। **वर्मा एवं कुलकर्णी (2022)** के अनुसार वे अपने रूप–रंग, क्षमताओं और सामाजिक स्थिति के आधार पर स्वयं का मूल्यांकन करते हैं, जिससे उनकी भावनात्मक स्थिति प्रभावित होती है। इस अवस्था में संवेगात्मक समर्थन, मार्गदर्शन और सकारात्मक संवाद अत्यंत आवश्यक हो जाते हैं। इससे विद्यार्थी अपनी भावनाओं को समझने और उन्हें स्वस्थ तरीके से व्यक्त करने में सक्षम होते हैं। यही क्षमता संवेगात्मक बुद्धि के रूप में उनके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

संवेगात्मक बुद्धि वह समग्र मानसिक क्षमता है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी भावनाओं को पहचानता, समझता, नियंत्रित करता है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को दूसरों की भावनाओं को समझने और उनके दृष्टिकोण को स्वीकार करने की क्षमता प्रदान करती है। **श्रीवास्तव (2022)** के अनुसार यह क्षमता व्यक्ति को परिस्थितियों के अनुसार अपने व्यवहार को अनुकूलित करने में सक्षम बनाती है, जिससे वह तनावपूर्ण स्थितियों में भी संतुलित बना रहता है। **अग्रवाल (2018)** के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि भावनाओं की पहचान, उनके अर्थ की समझ और उनके नियंत्रण से संबंधित है, जो व्यवहार को प्रभावी बनाती है। **बंसल एवं कौर (2019)** के अनुसार यह क्षमता व्यक्ति को अपनी तथा दूसरों की भावनाओं के साथ संतुलित व्यवहार करने में समर्थ बनाती है। **चौधरी (2020)** इसे आत्म–जागरुकता और आत्म–नियंत्रण की संयुक्त क्षमता के रूप में देखते हैं। **देशमुख (2017)** के अनुसार यह एक संज्ञानात्मक–भावनात्मक प्रक्रिया है जिसमें भावनाओं का उपयोग निर्णय लेने में किया जाता है। **जैन (2019)** के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि आत्म–प्रेरणा और लक्ष्य–उन्मुख व्यवहार से भी जुड़ी होती है। इस प्रकार संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति के विचार, भावना और व्यवहार के बीच संतुलन स्थापित कर उसे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफल और परिपक्व बनाती है।

संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में संतुलन, समझ और संवेदनशीलता के साथ आगे बढ़ने में सक्षम बनाती है। विद्यार्थियों के संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धि का विशेष महत्व है, क्योंकि यह उनके शैक्षणिक

प्रदर्शन को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। **यादव एवं मिश्रा (2022)** के अनुसार यह समय प्रबंधन और अनुशासन विकसित करने में सहायक होती है, जो शैक्षणिक सफलता के लिए आवश्यक हैं। **खण्डेलवाल एवं अरविन्द (2021)** के अनुसार यह सकारात्मक सोच विकसित कर तनाव को कम करती है और मानसिक संतुलन बनाए रखती है। **श्रीवास्तव एवं कुलश्रेष्ठ (2023)** के अनुसार यह सहानुभूति और सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ बनाती है। **खान एवं अली (2023)** के अनुसार यह संतुलित निर्णय लेने में सहायता करती है। **मेनन एवं कपूर (2022)** के अनुसार यह प्रभावी संवाद और नेतृत्व क्षमता को विकसित करती है। **सिन्हा एवं रॉय (2023)** के अनुसार यह अनुकूलन और टीमवर्क को बढ़ावा देती है। इस प्रकार संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति के समग्र विकास, सफलता और संतुलित व्यक्तित्व के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भारतीय समाज विविधताओं से परिपूर्ण है, जहाँ विद्यार्थियों की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में व्यापक अंतर देखने को मिलता है, जो उनकी शिक्षा पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। ग्रामीण और शहरी परिवेश, आर्थिक स्थिति तथा संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर विद्यार्थियों के अवसरों में असमानता उत्पन्न होती है, जिससे सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों के बच्चों को भेदभाव, संसाधनों की कमी और जागरुकता के अभाव का सामना करना पड़ता है, जबकि संपन्न वर्ग के विद्यार्थियों को बेहतर शैक्षिक सुविधाएँ सहज रूप से प्राप्त होती हैं। इसी असमानता को दूर करने के लिए भारतीय संविधान निर्माताओं ने विशेष प्रावधान किए और यह समझा कि केवल समान अवसर पर्याप्त नहीं हैं, वरन् सकारात्मक भेदभाव के माध्यम से कमजोर वर्गों को विशेष सहायता प्रदान करना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से आरक्षण नीति लागू की गई, जिससे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़े वर्गों को शिक्षा एवं रोजगार में अवसर मिल सकें। आरक्षण नीति के कारण समाज में आरक्षित और अनारक्षित वर्गों के बीच अवसरों और अनुभवों में अंतर देखने को मिलता है, जहाँ एक ओर आरक्षित वर्ग को विशेष अवसर मिलते हैं, वहीं सामान्य वर्ग को अधिक प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। इन दोनों वर्गों में पाये जाने वाले अन्तर को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थिनी द्वारा आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

❖ शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया गया है :–

1. आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

❖ शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

प्रस्तुत शोध में निम्न परिकल्पनाओं का प्रतिपादन किया गया है :–

1. आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन में सार्थक अन्तर नहीं है।
4. आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन में सार्थक अन्तर नहीं है।
5. आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

❖ शोध विधि

वर्तमान शोध की प्रकृति एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शोधार्थिनी द्वारा विवरणात्मक शोध विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

❖ जनसंख्या

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या में बिजनौर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 11 एवं 12 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

❖ न्यादर्श एवं न्यादर्श प्रविधि

प्रस्तुत शोध के न्यादर्श के लिए बिजनौर जिले के 15 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 600 विद्यार्थियों का यादृच्छिक न्यादर्श प्रविधि द्वारा चयन किया गया है। न्यादर्श में आरक्षित वर्ग के 300 एवं अनारक्षित वर्ग के 300 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।

❖ शोध में प्रयुक्त चर

प्रस्तुत शोध में संवेगात्मक बुद्धि को आश्रित चर के रूप में लिया गया है। शोध में वर्ग (आरक्षित एवं अनारक्षित) व क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी) को स्वतन्त्र चर के रूप में लिया गया है।

❖ शोध उपकरण

1. विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का मापन करने के लिए डॉ0 एस0के0 मंगल एवं श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत इमोशनल इन्टैलीजेन्स इन्वेन्टरी का प्रयोग किया गया है।

❖ सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए द्विमार्गी प्रसरण विश्लेषण का प्रयोग किया गया है।

❖ व्याख्या एवं विश्लेषण

सारणी – 1(क): आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता का मध्यमान तथा मानक विचलन

वर्ग	क्षेत्र	व्यक्तिगत जागरुकता		विद्यार्थियों की संख्या
		मध्यमान	मानक विचलन	
आरक्षित	ग्रामीण	11.38	4.62	150
	शहरी	11.10	9.09	150
	कुल	11.24	4.36	300
अनारक्षित	ग्रामीण	13.58	5.06	150
	शहरी	15.68	3.42	150
	कुल	14.63	4.44	300
कुल	ग्रामीण	12.48	4.96	300
	शहरी	13.39	4.41	300
	कुल	12.94	4.71	600

सारणी 1(क) में आरक्षित तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता के मध्यमान तथा मानक विचलन का प्रस्तुतीकरण किया गया है। सारणी के अनुसार आरक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता का मध्यमान 11.38 तथा मानक विचलन 4.62 प्राप्त हुआ है, जो यह इंगित करता है कि आरक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता का स्तर निम्न है। आरक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता का मध्यमान 11.10 तथा मानक विचलन 9.09 प्राप्त हुआ है, जो यह इंगित करता है कि आरक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता का स्तर भी निम्न है।

सारणी के अनुसार अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता का मध्यमान 13.58 तथा मानक विचलन 5.06 है, जिससे स्पष्ट होता है कि अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता का स्तर निम्न है। अनारक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता का मध्यमान 15.68 तथा मानक विचलन 3.42 है, जिससे स्पष्ट होता है कि अनारक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता का स्तर औसत है। सारणी से यह भी स्पष्ट है कि आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता का स्तर अपेक्षाकृत उच्च है। यह भी स्पष्ट है कि ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता का स्तर अपेक्षाकृत उच्च है। सारणी के अनुसार अनारक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता का स्तर सर्वाधिक उच्च है।

सारणी – 1(ख): प्रसरण विश्लेषण

प्रसरण स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता अंश	वर्गों के मध्यमान का योग	एफ मान	परिणाम
वर्ग	1723.815	1	1723.815	91.287**	सार्थक
क्षेत्र	124.215	1	124.215	6.578*	सार्थक
अन्तःक्रिया	212.415	1	212.415	11.249**	सार्थक
समूहों के मध्य	2060.445	3	686.815		
समूहों के अन्तर्गत	11254.513	596	18.883		

* = 0.05 सार्थकता स्तर ** = 0.01 सार्थकता स्तर

सारणी 1(ख) में आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्रसरण विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। सारणी के अनुसार स्वतन्त्रता अंश 1 तथा 596 पर आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्राप्त एफ मान 91.287 है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 6.64 से अधिक है। अर्थात् आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता में सार्थक अन्तर है।

स्वतन्त्रता अंश 1 तथा 596 पर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्राप्त एफ मान 6.578 है, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 3.84 से अधिक है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता में सार्थक अन्तर है।

स्वतन्त्रता अंश 1 तथा 596 पर वर्ग एवं क्षेत्र की अन्तःक्रिया के आधार पर विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्राप्त एफ मान 11.249 है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 6.64 से अधिक है। अर्थात् वर्ग एवं क्षेत्र की अन्तःक्रिया के आधार पर विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता में सार्थक अन्तर है।

अतः परिकल्पना कि **''आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं है''** पूर्ण रूप से निरस्त की जाती है।

सारणी – 2(क): आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता का मध्यमान तथा मानक विचलन

वर्ग	क्षेत्र	पारस्परिक जागरुकता		विद्यार्थियों की संख्या
		मध्यमान	मानक विचलन	
आरक्षित	ग्रामीण	11.44	4.16	150
	शहरी	11.49	4.13	150
	कुल	11.47	4.14	300
अनारक्षित	ग्रामीण	15.95	3.81	150
	शहरी	13.62	5.33	150
	कुल	14.79	4.77	300
कुल	ग्रामीण	13.70	4.57	300
	शहरी	12.56	4.88	300
	कुल	13.13	4.76	600

सारणी 2(क) में आरक्षित तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता के मध्यमान तथा मानक विचलन का प्रस्तुतीकरण किया गया है। सारणी के अनुसार आरक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता का मध्यमान 11.44 तथा मानक विचलन 4.16 प्राप्त हुआ है, जो यह इंगित करता है कि आरक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता का स्तर निम्न है। आरक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता का मध्यमान 11.49 तथा मानक विचलन 4.13 प्राप्त हुआ है, जो यह इंगित करता है कि आरक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता का स्तर भी निम्न है।

सारणी के अनुसार अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता का मध्यमान 15.95 तथा मानक विचलन 3.81 है, जिससे स्पष्ट होता है कि अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता का स्तर औसत है। अनारक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता का मध्यमान 13.62 तथा मानक विचलन 5.33 है, जिससे स्पष्ट होता है कि अनारक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता का स्तर भी औसत है। सारणी से यह भी स्पष्ट है कि आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता का स्तर अपेक्षाकृत उच्च है। यह भी स्पष्ट है कि शहरी विद्यार्थियों की तुलना में ग्रामीण विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता का स्तर अपेक्षाकृत उच्च है। सारणी के अनुसार अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता का स्तर सर्वाधिक उच्च है।

सारणी – 2(ख): प्रसरण विश्लेषण

प्रसरण स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता अंश	वर्गों के मध्यमान का योग	एफ मान	परिणाम
वर्ग	1653.360	1	1653.360	85.432**	सार्थक
क्षेत्र	194.940	1	194.940	10.073**	सार्थक
अन्तःक्रिया	211.227	1	211.227	20.914**	सार्थक
समूहों के मध्य	2059.527	3	686.509		
समूहों के अन्तर्गत	11534.333	596	19.353		

** = 0.01 सार्थकता स्तर

सारणी 2(ख) में आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्रसरण विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। सारणी के अनुसार स्वतन्त्रता अंश 1 तथा 596 पर आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्राप्त एफ मान 85.432 है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 6.64 से अधिक है। अर्थात् आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता में सार्थक अन्तर है।

स्वतन्त्रता अंश 1 तथा 596 पर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्राप्त एफ मान 10.073 है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 3.84 से अधिक है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता में सार्थक अन्तर है।

स्वतन्त्रता अंश 1 तथा 596 पर वर्ग एवं क्षेत्र की अन्तःक्रिया के आधार पर विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्राप्त एफ मान 20.914 है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 6.64 से अधिक है। अर्थात् वर्ग एवं क्षेत्र की अन्तःक्रिया के आधार पर विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता में सार्थक अन्तर है।

अतः परिकल्पना कि **''आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं है''** पूर्ण रूप से निरस्त की जाती है।

सारणी – 3(क): आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन का मध्यमान तथा मानक विचलन

वर्ग	क्षेत्र	व्यक्तिगत प्रबन्धन		विद्यार्थियों की संख्या
		मध्यमान	मानक विचलन	
आरक्षित	ग्रामीण	12.03	4.45	150
	शहरी	12.13	4.44	150
	कुल	12.08	4.43	300
अनारक्षित	ग्रामीण	12.62	2.64	150
	शहरी	16.43	4.71	150
	कुल	14.52	4.27	300
कुल	ग्रामीण	12.32	3.66	300
	शहरी	14.28	5.05	300
	कुल	13.30	4.51	600

सारणी 3(क) में आरक्षित तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन के मध्यमान तथा मानक विचलन का प्रस्तुतीकरण किया गया है। सारणी के अनुसार आरक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन का मध्यमान 12.03 तथा मानक विचलन 4.45 प्राप्त हुआ है, जो यह इंगित करता है कि आरक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन का स्तर निम्न है। आरक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन का मध्यमान 12.13 तथा मानक विचलन 4.44 प्राप्त हुआ है, जो यह इंगित करता है कि आरक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन का स्तर भी निम्न है। सारणी के अनुसार अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन का मध्यमान 12.62 तथा मानक विचलन 2.64 है, जिससे स्पष्ट होता है कि अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन का स्तर निम्न है। अनारक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन का मध्यमान 16.43 तथा मानक विचलन 4.71 है, जिससे स्पष्ट होता है कि अनारक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन का स्तर औसत है। सारणी से यह भी स्पष्ट है कि आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन का स्तर अपेक्षाकृत उच्च है। यह भी स्पष्ट है कि ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन का स्तर अपेक्षाकृत उच्च है। सारणी के अनुसार अनारक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन का स्तर सर्वाधिक उच्च है।

सारणी – 3(ख): प्रसरण विश्लेषण

प्रसरण स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता अंश	वर्गों के मध्यमान का योग	एफ मान	परिणाम
वर्ग	895.482	1	895.482	52.118**	सार्थक
क्षेत्र	574.282	1	574.282	33.424**	सार्थक
अन्तःक्रिया	517.082	1	517.082	30.095**	सार्थक
समूहों के मध्य	1986.845	3	662.282		
समूहों के अन्तर्गत	10240.340	596	17.182		

** = 0.01 सार्थकता स्तर

सारणी 3(ख) में आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्रसरण विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। सारणी के अनुसार स्वतन्त्रता अंश 1 तथा 596 पर आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्राप्त एफ मान 52.118

है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 6.64 से अधिक है। अर्थात् आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन में सार्थक अन्तर है।

स्वतन्त्रता अंश 1 तथा 596 पर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्राप्त एफ मान 33.424 है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 3.84 से अधिक है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन में सार्थक अन्तर है।

स्वतन्त्रता अंश 1 तथा 596 पर वर्ग एवं क्षेत्र की अन्तःक्रिया के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्राप्त एफ मान 30.095 है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 6.64 से अधिक है। अर्थात् वर्ग एवं क्षेत्र की अन्तःक्रिया के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन में सार्थक अन्तर है।

अतः परिकल्पना कि **''आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन में सार्थक अन्तर नहीं है''** पूर्ण रूप से निरस्त की जाती है।

सारणी – 4(क): आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन का मध्यमान तथा मानक विचलन

वर्ग	क्षेत्र	पारस्परिक प्रबन्धन		विद्यार्थियों की संख्या
		मध्यमान	मानक विचलन	
आरक्षित	ग्रामीण	14.08	3.16	150
	शहरी	13.85	3.10	150
	कुल	13.97	3.13	300
अनारक्षित	ग्रामीण	15.27	3.33	150
	शहरी	18.27	3.30	150
	कुल	16.77	3.64	300
कुल	ग्रामीण	14.68	3.31	300
	शहरी	16.06	3.88	300
	कुल	15.37	3.67	600

सारणी 4(क) में आरक्षित तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन के मध्यमान तथा मानक विचलन का प्रस्तुतीकरण किया गया है। सारणी के अनुसार आरक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन का मध्यमान 14.08 तथा मानक विचलन 3.16 प्राप्त हुआ है, जो यह इंगित करता है कि आरक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन का स्तर निम्न है। आरक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन का मध्यमान 13.85 तथा मानक विचलन 3.10 प्राप्त हुआ है, जो यह इंगित करता है कि आरक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन का स्तर भी निम्न है। सारणी के अनुसार अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन का मध्यमान 15.27 तथा मानक विचलन 3.33 है, जिससे स्पष्ट होता है कि अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन का स्तर औसत है। अनारक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन का मध्यमान 18.27 तथा मानक विचलन 3.30 है, जिससे स्पष्ट होता है कि अनारक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन का स्तर भी औसत है। सारणी से यह भी स्पष्ट है कि आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन का स्तर अपेक्षाकृत उच्च है। यह भी स्पष्ट है कि ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन का स्तर अपेक्षाकृत उच्च है। सारणी के अनुसार अनारक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन का स्तर सर्वाधिक उच्च है।

सारणी – 4(ख): प्रसरण विश्लेषण

प्रसरण स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता अंश	वर्गों के मध्यमान का योग	एफ मान	परिणाम
वर्ग	1178.802	1	1178.802	112.731**	सार्थक
क्षेत्र	287.042	1	287.042	27.450**	सार्थक
अन्तःक्रिया	392.042	1	392.042	37.482**	सार्थक
समूहों के मध्य	1857.885	3	619.295		
समूहों के अन्तर्गत	6232.233	596	10.457		

** = 0.01 सार्थकता स्तर

सारणी 4(ख) के अनुसार स्वतन्त्रता अंश 1 तथा 596 पर आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्राप्त एफ मान 112.731 है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 6.64 से अधिक है। अर्थात् आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन में सार्थक अन्तर है।

स्वतन्त्रता अंश 1 तथा 596 पर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्राप्त एफ मान 27.450 है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 3.84 से अधिक है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन में सार्थक अन्तर है।

स्वतन्त्रता अंश 1 तथा 596 पर वर्ग एवं क्षेत्र की अन्तःक्रिया के आधार पर विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्राप्त एफ मान 37.482 है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 6.64 से अधिक है। अर्थात् वर्ग एवं क्षेत्र की अन्तःक्रिया के आधार पर विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन में सार्थक अन्तर है।

अतः परिकल्पना कि **"आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन में सार्थक अन्तर नहीं है"** पूर्ण रूप से निरस्त की जाती है।

सारणी – 5(क): आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान तथा मानक विचलन

वर्ग	क्षेत्र	संवेगात्मक बुद्धि		विद्यार्थियों की संख्या
		मध्यमान	मानक विचलन	
आरक्षित	ग्रामीण	48.95	7.02	150
	शहरी	48.58	6.90	150
	कुल	48.77	6.95	300
अनारक्षित	ग्रामीण	57.43	6.60	150
	शहरी	64.02	6.95	150
	कुल	60.72	8.81	300
कुल	ग्रामीण	53.19	9.41	300
	शहरी	56.30	10.21	300
	कुल	54.74	9.93	600

सारणी 5(क) में आरक्षित तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान तथा मानक विचलन का प्रस्तुतीकरण किया गया है। सारणी के अनुसार आरक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 48.95 तथा मानक विचलन 7.02 प्राप्त हुआ है, जो यह इंगित करता है कि आरक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर निम्न है। आरक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 48.58 तथा मानक विचलन 6.90 प्राप्त हुआ है, जो यह इंगित करता है कि आरक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर भी निम्न है। सारणी के अनुसार अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 57.43 तथा मानक विचलन 6.60 है, जिससे स्पष्ट होता है कि अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर निम्न है। अनारक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 64.02 तथा मानक विचलन 6.95 है, जिससे स्पष्ट होता है कि अनारक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर औसत है। सारणी से यह भी स्पष्ट है कि आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर अपेक्षाकृत उच्च है। यह भी स्पष्ट है कि ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर अपेक्षाकृत उच्च है। सारणी के अनुसार अनारक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर सर्वाधिक उच्च है।

सारणी – 5(ख): प्रसरण विश्लेषण

प्रसरण स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता अंश	वर्गों के मध्यमान का योग	एफ मान	परिणाम
वर्ग	21444.282	1	21444.282	271.375**	सार्थक
क्षेत्र	1450.815	1	1450.815	25.125**	सार्थक
अन्तःक्रिया	1813.082	1	1813.082	31.399**	सार्थक
समूहों के मध्य	24708.178	3	8236.059		
समूहों के अन्तर्गत	34414.820	596	57.743		

** = 0.01 सार्थकता स्तर

सारणी 5(ख) में आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्रसरण विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

सारणी के अनुसार स्वतन्त्रता अंश 1 तथा 596 पर आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्राप्त एफ मान 271.375 है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 6.64 से अधिक है। अर्थात् आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर है। आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर अपेक्षाकृत उच्च है।

स्वतन्त्रता अंश 1 तथा 596 पर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्राप्त एफ मान 25.125 है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 3.84 से अधिक है। अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर है। यह भी स्पष्ट है कि ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर अपेक्षाकृत उच्च है।

स्वतन्त्रता अंश 1 तथा 596 पर वर्ग एवं क्षेत्र की अन्तःक्रिया के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्राप्त एफ मान 31.399 है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 6.64 से अधिक है। अर्थात्

वर्ग एवं क्षेत्र की अन्तःक्रिया के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर है। सारणी के अनुसार अनारक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर सर्वाधिक उच्च है।

अतः परिकल्पना कि **''आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है''** पूर्ण रूप से निरस्त की जाती है।

❖ परिणाम

प्रस्तुत शोध से निम्न परिणाम प्राप्त किये गये हैं :–

1.1 आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता में सार्थक अन्तर पाया गया है। आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता का स्तर अपेक्षाकृत उच्च पाया गया है।

1.2 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता में सार्थक अन्तर पाया गया है। ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता का स्तर अपेक्षाकृत उच्च पाया गया है।

1.3 वर्ग एवं क्षेत्र की अन्तःक्रिया के आधार पर विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता में सार्थक अन्तर पाया गया है। अनारक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत जागरुकता का स्तर सर्वाधिक उच्च पाया गया है।

2.1 आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता में सार्थक अन्तर पाया गया है। आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता का स्तर अपेक्षाकृत उच्च पाया गया है।

2.2 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता में सार्थक अन्तर पाया गया है। शहरी विद्यार्थियों की तुलना में ग्रामीण विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता का स्तर अपेक्षाकृत उच्च पाया गया है।

2.3 वर्ग एवं क्षेत्र की अन्तःक्रिया के आधार पर विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता में सार्थक अन्तर पाया गया है। अनारक्षित वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों की पारस्परिक जागरुकता का स्तर सर्वाधिक उच्च पाया गया है।

3.1 आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन में सार्थक अन्तर पाया गया है। आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन का स्तर अपेक्षाकृत उच्च पाया गया है।

3.2 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन में सार्थक अन्तर पाया गया है। ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन का स्तर अपेक्षाकृत उच्च पाया गया है।

3.3 वर्ग एवं क्षेत्र की अन्तःक्रिया के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन में सार्थक अन्तर पाया गया है। अनारक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रबन्धन का स्तर सर्वाधिक उच्च पाया गया है।

4.1 आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन में सार्थक अन्तर पाया गया है। आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन का स्तर अपेक्षाकृत उच्च पाया गया है।

4.2 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन में सार्थक अन्तर पाया गया है। ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन का स्तर अपेक्षाकृत उच्च पाया गया है।

4.3 वर्ग एवं क्षेत्र की अन्तःक्रिया के आधार पर विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन में सार्थक अन्तर पाया गया है। अनारक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों के पारस्परिक प्रबन्धन का स्तर सर्वाधिक उच्च पाया गया है।

5.1 आरक्षित वर्ग तथा अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया है। आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर अपेक्षाकृत उच्च पाया गया है।

5.2 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया है। ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर अपेक्षाकृत उच्च पाया गया है।

5.3 वर्ग एवं क्षेत्र की अन्तःक्रिया के आधार पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया है। अनारक्षित वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर सर्वाधिक उच्च पाया गया है।

❖ शैक्षिक निहितार्थ

विद्यालय प्रबंधन, प्रशासन तथा शिक्षकों की यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है कि वे ऐसा शैक्षिक वातावरण निर्मित करें जो पूर्णतः समावेशी, न्यायपूर्ण और संवेदनशील हो। ऐसे वातावरण में आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के सभी विद्यार्थियों को समान अवसर, सम्मान और सहभागिता का अधिकार मिलना चाहिए। इसके लिए विद्यालय स्तर पर स्पष्ट नीतियाँ लागू की जानी चाहिए जो भेदभाव, सामाजिक दूरी और पूर्वाग्रहों को समाप्त करने पर केंद्रित हों। साथ ही सांस्कृतिक समावेशन, सामाजिक समानता और सहयोगात्मक अधिगम से जुड़े कार्यक्रमों का नियमित आयोजन आवश्यक है, जिससे विद्यार्थियों में परस्पर सम्मान, सहानुभूति और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित हो सके। शिक्षकों को भी समय–समय पर प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए ताकि वे विविध पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थियों की भावनात्मक आवश्यकताओं को समझकर उन्हें उचित मार्गदर्शन दे सकें। विद्यालयों में जीवन कौशल शिक्षा, भावनात्मक जागरुकता

कार्यक्रम, समूह चर्चा, भूमिका–अभिनय और ध्यान जैसी गतिविधियों को शामिल करना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं को पहचानने, समझने और नियंत्रित करने का अवसर प्राप्त हो। इसके अतिरिक्त सुदृढ़ परामर्श सेवाएँ विद्यार्थियों को व्यक्तिगत, शैक्षणिक और सामाजिक समस्याओं के समाधान में सहायता प्रदान करती हैं, जिससे उनमें आत्मनियंत्रण, सहानुभूति और सकारात्मक सोच का विकास होता है।

इसी प्रकार शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों और पाठ्यक्रम निर्माताओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है कि वे भावी शिक्षकों और विद्यार्थियों के समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए योजनाएँ तैयार करें। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में केवल विषय–ज्ञान ही नहीं, वरन् मानवीय संवेदनाएँ, विविधता और समावेशन की गहरी समझ को भी शामिल किया जाना चाहिए। केस स्टडी, समूह चर्चा, भूमिका–अभिनय और परावर्तनात्मक लेखन जैसी गतिविधियों के माध्यम से प्रशिक्षुओं को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से परिचित कराया जाना चाहिए, जिससे वे विद्यार्थियों की भावनात्मक आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझ सकें। पाठ्यक्रम को भी इस प्रकार विकसित किया जाना चाहिए कि उसमें नैतिक शिक्षा, सहानुभूति, सहयोग, सह–अस्तित्व और सामाजिक समरसता से जुड़े विषयों को प्रमुखता मिले। विविध सामाजिक पृष्ठभूमियों से जुड़े उदाहरण और कहानियाँ विद्यार्थियों में व्यापक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक होती हैं। साथ ही मार्गदर्शकों और परामर्शदाताओं द्वारा सुरक्षित, गोपनीय और विश्वासपूर्ण वातावरण में नियमित परामर्श सत्र आयोजित किए जाने चाहिए, जिससे विद्यार्थी अपनी भावनाओं को खुलकर व्यक्त कर सकें। इस प्रकार समन्वित प्रयासों के माध्यम से सभी वर्गों के विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और संवेगात्मक संतुलन का प्रभावी विकास संभव हो सकता है।

❖ सन्दर्भ सूची

अग्रवाल, पी0 (2018). डिफाइनिंग इमोशनल इंटेलिजेंस इन एजुकेशनल कॉन्टेक्स्ट्स. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकॉलॉजी, 2*(1), 50–72।

खंडेलवाल, पी0 एवं अरविंद, आर0 (2021). इमोशनल इंटेलिजेंस ऐज ए प्रेडिक्टर ऑफ स्ट्रेस मैनेजमेंट अमंग अडोलसेंट्स. *जर्नल ऑफ मेंटल हेल्थ एण्ड वेलबीइंग, 3*(2), 90–115।

खान, एम0 एवं अली, एस0 (2023). इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड डिसीजन–मेकिंग स्किल्स इन अडोलसेंट्स. *जर्नल ऑफ कॉग्निटिव एण्ड बिहेवियरल स्टडीज, 8*(1), 75–98।

चौधरी, एस0 (2020). सेल्फ–रेगुलेशन एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंस. *जर्नल ऑफ मेंटल हेल्थ स्टडीज, 4*(3), 120–139।

जैन, वी0 (2019). मोटिवेशन एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंस. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 12*(3), 45–66।

देशमुख, ए0 (2017). इमोशन्स ऐज इन्फॉर्मेशन इन डिसीजन मेकिंग. *जर्नल ऑफ कॉग्निटिव साइकॉलॉजी, 9*(2), 65–84।

बंसल, आर0 एवं कौर, एच0 (2019). सोशल डायमेंशन्स ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइकॉलॉजी, 11*(2), 88–110।

मेनन, वी0 एवं कपूर, आर0 (2022). इमोशनल इंटेलिजेंस ऐज ए प्रेडिक्टर ऑफ लीडरशिप एण्ड कम्युनिकेशन इफेक्टिवनेस. *जर्नल ऑफ ऑर्गनाइजेशनल साइकॉलॉजी, 6*(2), 120–145।

यादव, आर0 एवं मिश्रा, एस0 (2022). इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड अकैडमिक अचीवमेंट अमंग सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकॉलॉजी, 1*(3), 145–168।

वर्मा, एन0 एवं कुलकर्णी, ए0 (2022). सेल्फ–इमेज एण्ड इमोशनल स्टेटस इन सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकॉलॉजी, 11*(1), 55–79।

शर्मा, आर0 (2019). फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन एण्ड ह्यूमन डेवलपमेंट. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल थॉट, 12*(2), 45–60।

सक्सेना, आर0 (2018). इमोशनल इंस्टेबिलिटी इन अडोलसेंट्स : चैलेंजेज इन स्कूल एनवायरनमेंट्स. *जर्नल ऑफ स्कूल साइकॉलॉजी, 6*(3), 120–142।

सिन्हा, आर0 एवं रॉय, पी0 (2023). इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड इट्स इम्पैक्ट ऑन प्रॉब्लम सॉल्विंग, अडैप्टेबिलिटी एण्ड टीमवर्क. *जर्नल ऑफ एप्लाइड बिहेवियरल साइंसेज, 8*(2), 102–128।

श्रीवास्तव, ए0 एवं कुलश्रेष्ठ, एन0 (2023). इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड इंटरपर्सनल रिलेशनशिप्स इन सोशल कॉन्टेक्स्ट्स. *जर्नल ऑफ सोशल एण्ड बिहेवियरल स्टडीज, 7*(2), 112–138।

श्रीवास्तव, एस0 (2022). अंडरस्टैंडिंग इमोशनल इंटेलिजेंस ऐज ए मल्टीफैसेटेड कंस्ट्रक्ट. *जर्नल ऑफ एडवांस्ड साइकॉलॉजिकल रिसर्च, 5*(2), 88–109।